Appendix-XI

आंगन की सीख

शहरी महिला प्रवेशिका

राज्य संदर्भ केन्द्र,
राजस्थान प्रौढ शिक्षण समिति
जयपुर

आस पास के गांवों से और दूर दराज के कस्बों से कई परिवार शहरों में आ बसते हैं। शहर में आने का एक मात्र मकसद मजदूरी पाना व रोजी कमाना होता है। आदमी को तो कोई काम या मजदूरी मिल जाती है लेकिन [illegible] अकेली व खाली छूट जाती है। न गांव, न मेल और न ही अपनों का साथ। हर छोटी-छोटी जरूरत के लिए आदमी का आसरा, आदमी का इंतजार। घर में अकेली व पूरी तरह पराधीन।

शहर तो वैसे भी एक सपना ही होता है। बाहर से आ बसे परिवार वर्षों तक बाहर के बने रहते हैं। अलग-अलग [illegible] रहते हैं। अमीरी फासले पैदा करती है और गरीबी इन फासलों के बीच झूलती रहती है। रहन-सहन, शिक्षा, भाषा तथा संबधों के स्वार्थी समीकरण इन फासलों को बढ़ाते रहते हैं। और इन्हीं फासलों के कारण 'चार गांव' की बहनें एक दिन 'बरतनवाली', 'पोचेवाली' या 'पानीवाली' बाई बन कर रह जाती हैं। [illegible] हमें विचलित करती है।

"आंगन की सीख" ऐसे फासलों को कम करने वाली किताब है। अपने घर आंगन से जोड़ने वाली किताब। पढ़ने-लिखने की इच्छा जगाने वाली किताब। एक बेहतर और सम्मानजनक जिंदगी जीने में आपकी मदद करने वाली किताब।

यह किताब जयपुर की कच्ची बस्तियों में काम करते हुए लिखी गयी थी और वहीं पर इसका रूप भी निखरता गया। आजमाकर उपयोगी पाने के बाद ही इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित किया गया था। पहले संस्करण का सर्वत्र स्वागत हुआ है इसलिए प्रस्तुत है दूसरा संस्करण।

यह संस्करण भी शहरों में रहने वाली और सीखने की इच्छा रखने वाली सभी महिलाओं को सादर समर्पित है। ☐

रमेश थानवी
निदेशक

आंगन की सीख
शहरी महिला प्रवेशिका

☐ लेखक :
रमेश थानवी एवं ममता जैतली
☐ सहयोग एवं सलाह
वीरेन्द्र त्रिपाठी, त्रिलोकीप्रसाद शर्मा,
अरुणा दुबे, सुशीला सोनी एवं शांति जैन
☐ दूसरा संस्करण
मार्च, 1985
☐ कीमत :
चार रुपया
☐ निर्माण
राज्य संदर्भ केन्द्र (प्रौढ़ शिक्षा), जयपुर
☐ प्रकाशन
© राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति ,
सी - 85, रामदास मार्ग, तिलकनगर, जयपुर
☐ रेखाकन एव मुखपृष्ठ
अभय कोठारी
☐ मुद्रक :
अभय कोठारी कम्युनिकेशन सर्विसेज, अहमदाबाद

आंगन की सीख
शहरी महिला प्रवेशिका

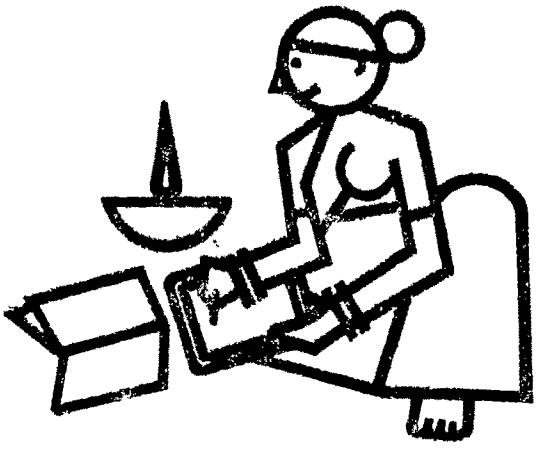

पाठ एक

272

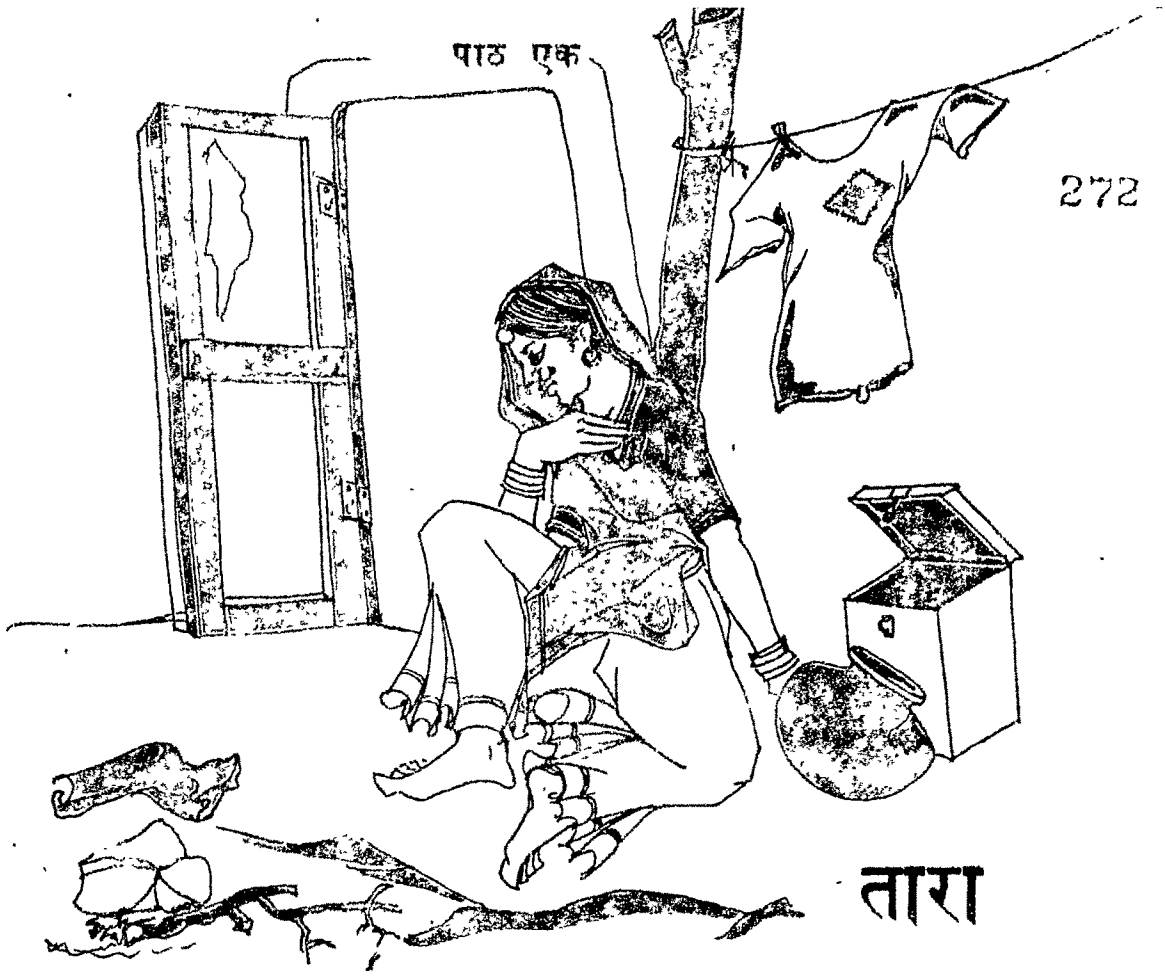

तारा

पाठ दो

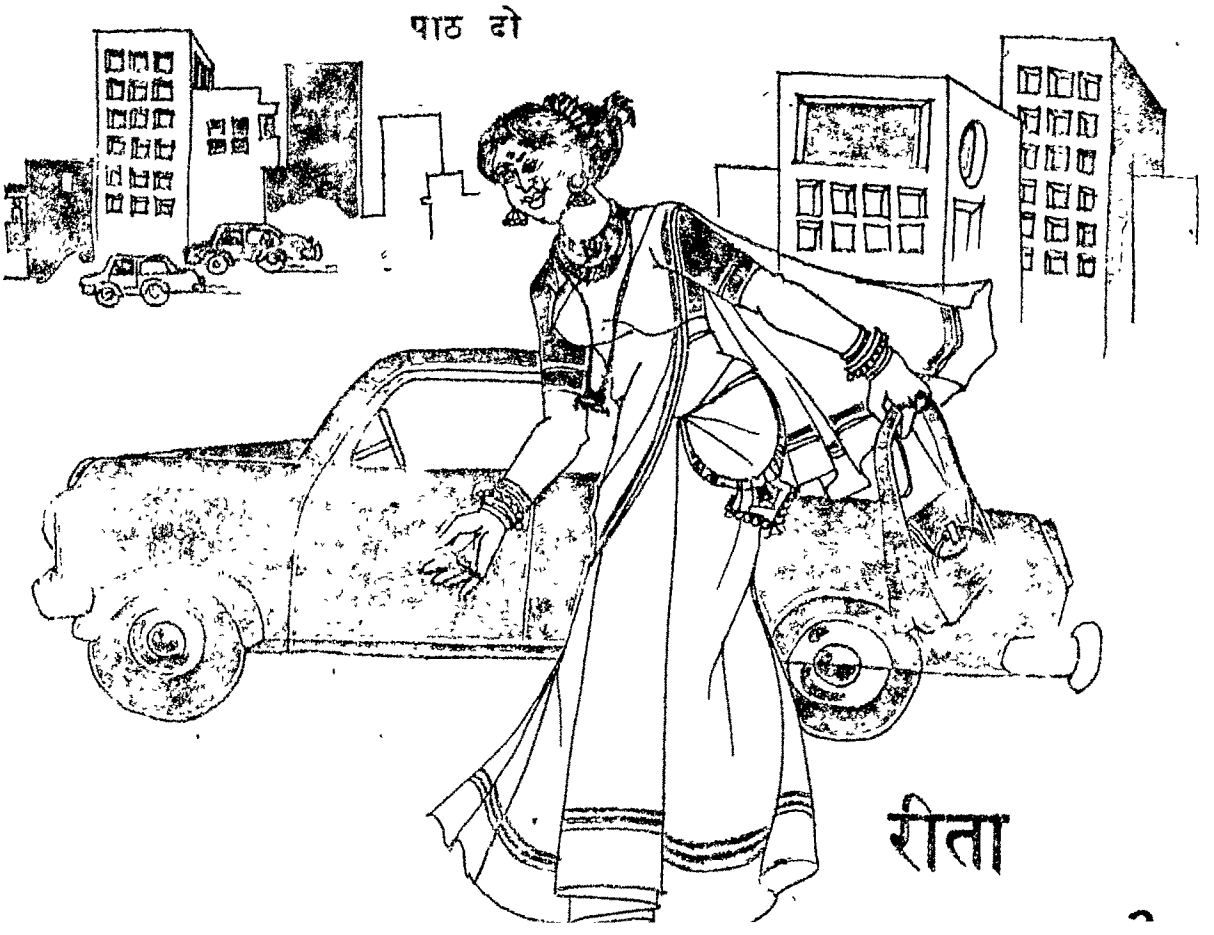

रीता

आशा

आशा

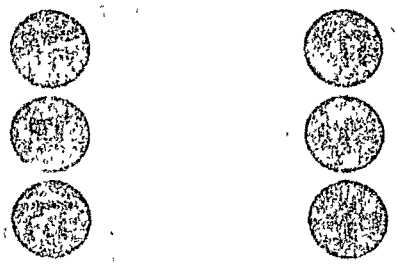

आ	श	आशा
शा	अ	आ
श	आ	आशा
अ	शा	
आ	शा	

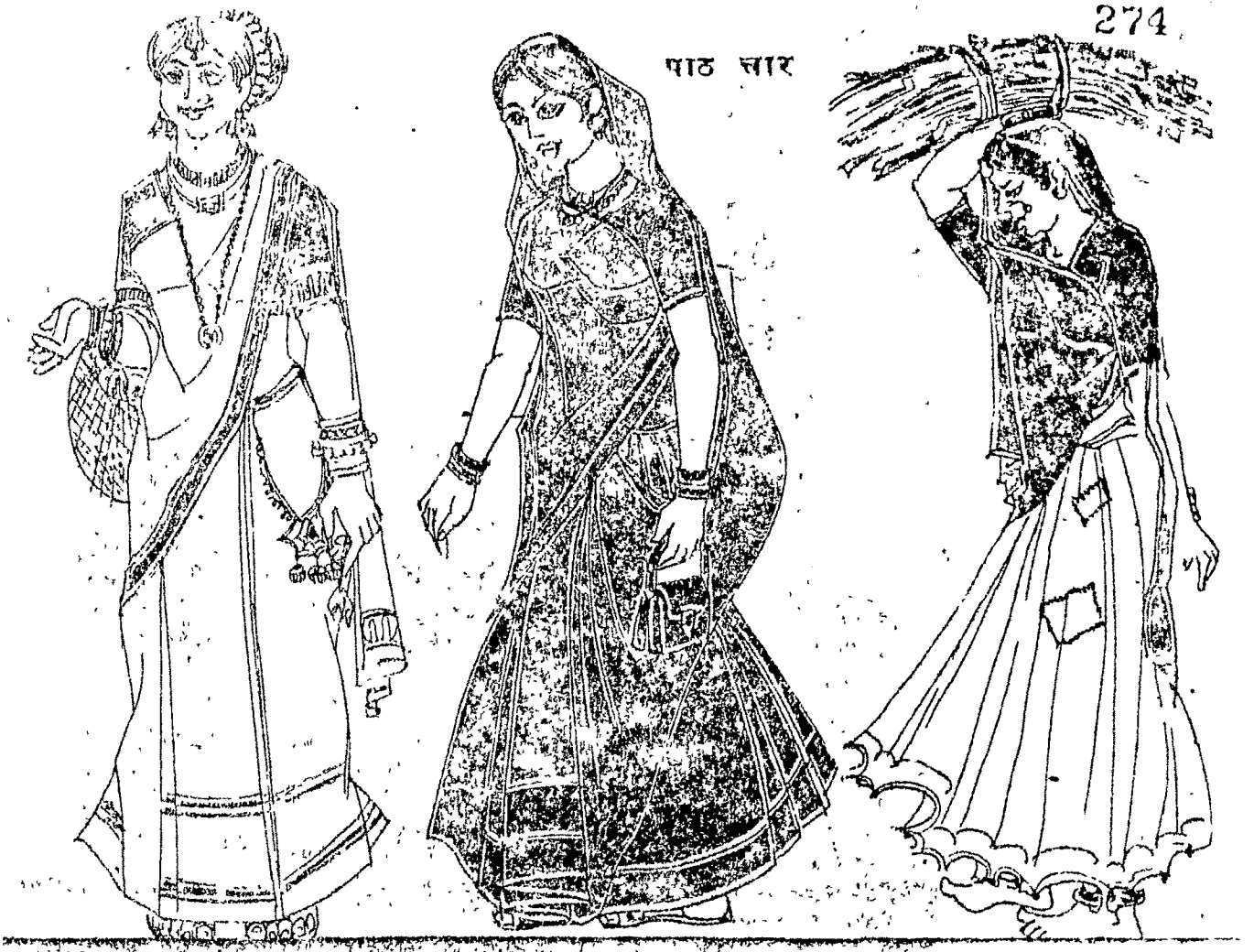

पाठ चार

पोशाक में फर्क

पोशाक

प ो क

- आप आपा पापा पाक पका
- कप पक शाक शाक आकाश
- आओ पकाओ पाओ
- शोक शोक कोप पोशाक

[illegible]

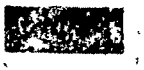

ओ

[illegible]

आशा आओ

पापा आओ

आशा का कप

आशा का शाक पका

काका आओ

आशा आओ

आशा शाक पकाओ

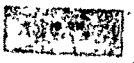

गरीब की पोशाक

गरीब

ग र ी ब

गरीब गरक गपशप आग काग

रबर अगर रगरग राग रोग रोक

पीर बीर गरीब बकरी

बराबर बाग बाप बारबार शराब

ईश बाई राई पाई काई

गरीब का रोग । रोग की पीर ।
पीर की आग ।
तारा की पीर । तारा की गरीबी
गरीब तारा की पोशाक ।
तार तार पोशाक ।

ई

तारा की गरीबी । तारा की हैरत

तारा

त

- तप तरतीब तकरार तपत ताकत
- हक हरारत हरकत हार बहार
- पैर बैर हैरत गैरत गैर फैर
- ऐब ऐश ऐतबार

हैरत

है

तारा की गरीबी । तारा का रोग ।
तारा की हैरत । तार-तार पोशाक ।
पगार की बात । तारा की आग ।
आओ तारा को बात बताओ ।
ताकत की बात बताओ ।
हक की बात बताओ ।
बराबरी का हक । तारा का हक ।

ऐ

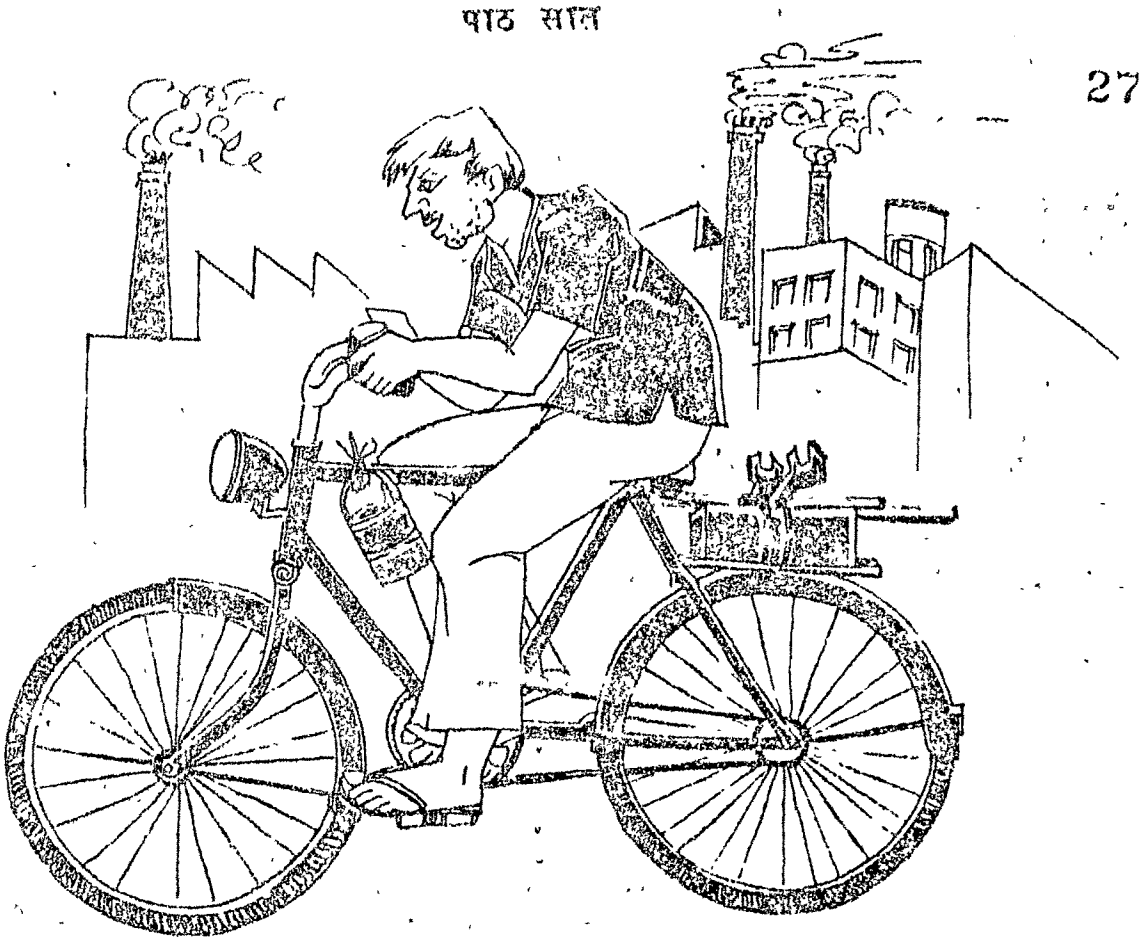

तारा का घरवाला मजूर है

घरवाला मजूर

घ व ल म ज ू

- घर घाघ बघार घी बीघा
- वर वश तवा हवा घाव वार वीर
- लत लाल लाल बोली पालक बालक
- मलमल मालताल मामा कमाई कीमत
- जमाल जमाई जीत तीज जवाब आवाज
- जूता जूती पूरी बूरा जरूरत रूप
- ऊब ऊपर ताऊ ऊल-जलूल

तारा का घरवाला मजूर है ।
जमकर काम करता है ।
मजूरी कम पाता है ।
हर मजूर की मजूरी कम है ।
हर मजूर गरीब है ।
हर घर गरीब है ।
तारा गरीब है ।

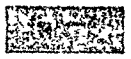

ऊ , [कोमा]

पाठ आठ

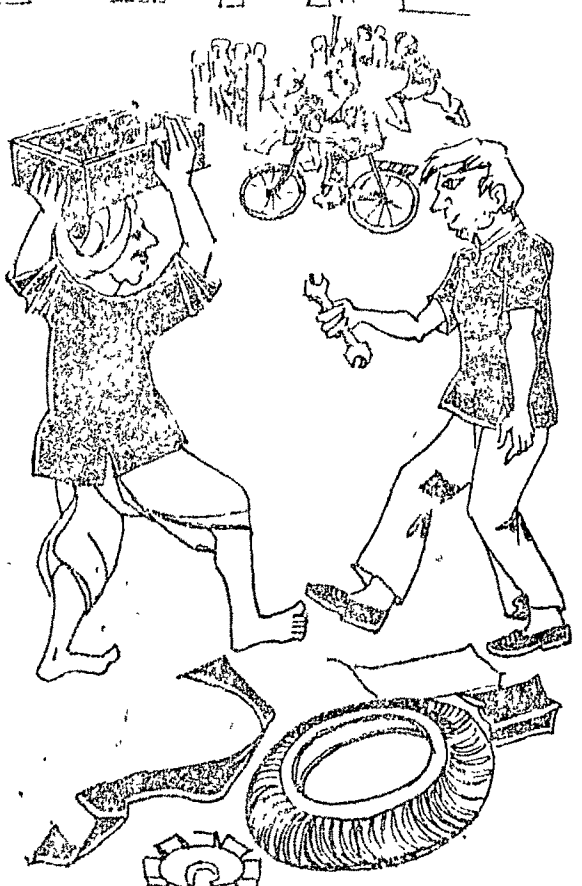

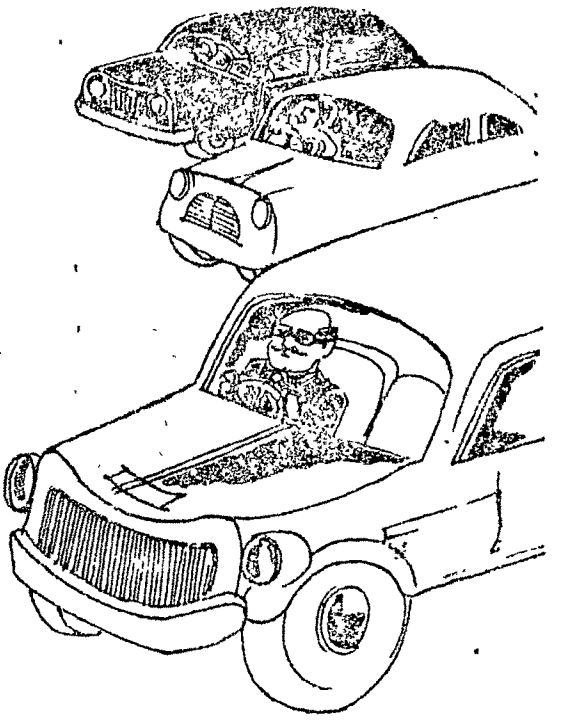

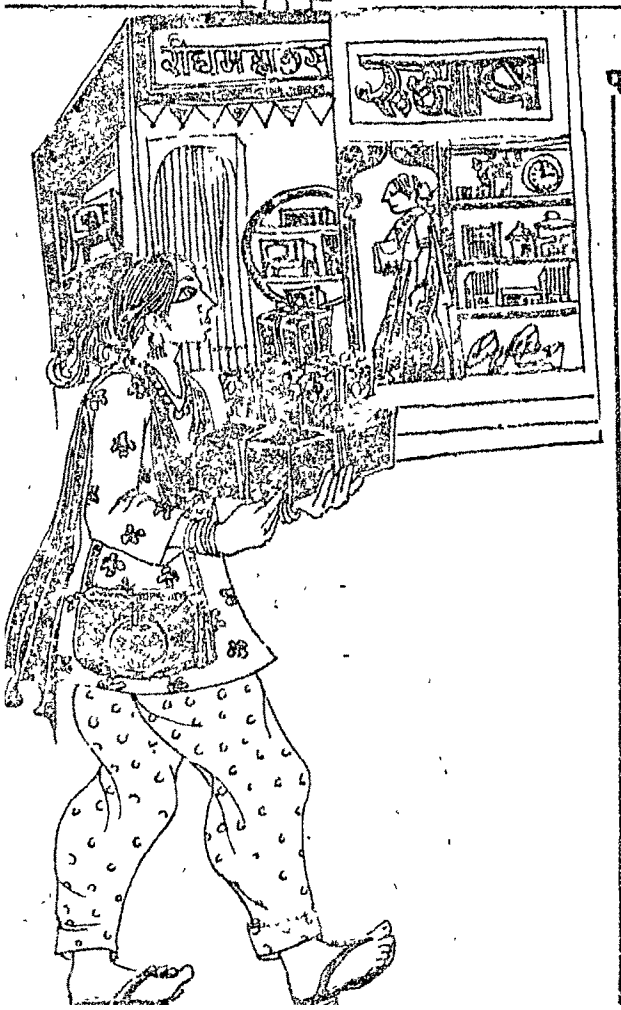

पाठ नौ

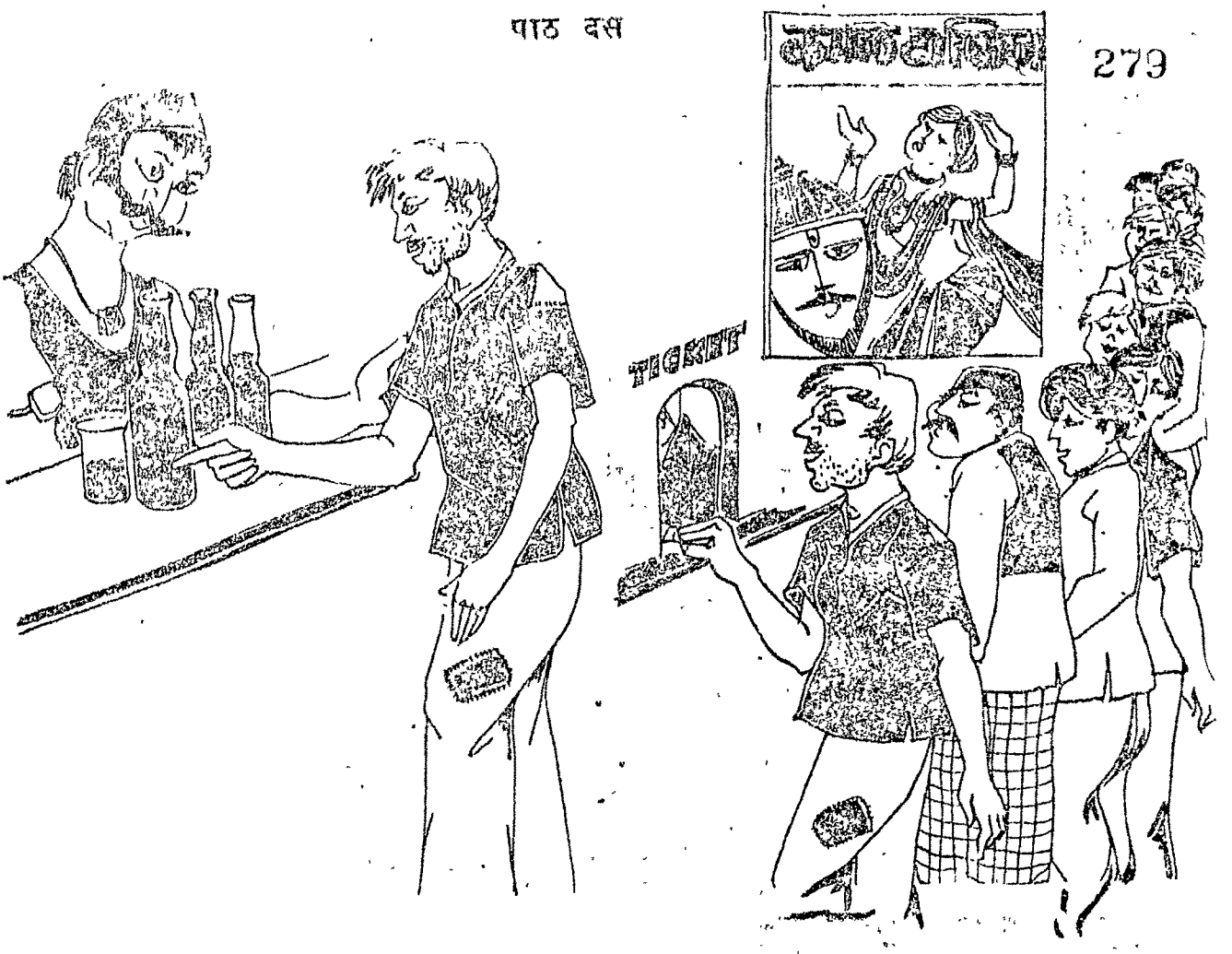

दारू सिनेमा की आदत

दारू सिनेमा

द ि स न

दवा दंगा दलदल दरार दीवार

सगा सगाई सरकार सांस

दिल दिमाग दिन पति पिता

नर नजर नरम नगीना ननिहाल

लेना-देना बेलन दहेज सहेली

इमारत इमली इलाज इनाम

एक एकता एवज

तारा का घरवाला ऐबी है ।
वह दारू पीता है । सिनेमा जाता है ।
सारा पैसा दारू सिनेमा पर खर्च करता है
तारा परेशान है । सारा घर परेशान है
तारा मना करती है पर तारा की बात
बेकार जाती है । तारा का मन राशन पर
है । पति का मन सिनेमा दारू पर ।
तारा सब सहती है ।
तारा का पति अपनी आदत से मजबूर है

इ ए

तारा कौड़ी-कौड़ी जोड़कर किफायत से खर्च चलाती है

कौड़ी   किफायत   खर्च

ौ ड़   फ य   ख र्च

- अलौकी लौकी दौलत रौनक सौदा
- पेड़ लकड़ी लड़की साड़ी
  गाड़ी लाड़ी लूगड़ी
- फली फसल फिकर फुरसत
  फिजूल फीता फावड़ा
- यश यम याद दया
  माया काया कायदा
- खमीर खीर राखी खिलौना
  खबर खेल खाद
- चमचा बेलचा देगची
  चूड़ी बचत चाय चीनी
- औरत औजार औकात औलाद
- कर्ज खर्च मिर्च सर्प चर्चा
  मर्जी फर्जी अर्जी

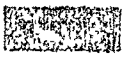

तारा का पति घर के खर्चे से बेखबर है । उसकी आदत फिजूलखर्ची की है ।   औ

तारा किफायती है । घर का काम खूब जानती है । सारा काम करती है ।
बचपन की सीखी सिलाई अब काम आ रही है । अपने कपड़े सिलती है । पास-पड़ौस के
कपड़े सिलती है । किसी तरह खर्च चला लेती है ।

कम भोजन और चिन्ता से अस्वस्थ तारा

भोजन

भ

भजन भगत भगवान भरोसा

भरम भात भाई भूख

भस्मी लस्सी स्कूल बस्ती

सस्ता मस्ती

थकान थन थाली थूली नथ

राजस्थान

अस्वस्थ

स थ

इज्जत लज्जा सज्जन ज्वार ज्वर

अन्न पन्ना बिन्दी गन्दगी

पक्का चक्की हक्का-बक्का मक्खी

अम्मा चम्मच पप्प जिम्मेदारी

ज् न् क् म्

तारा का घर तारा के बूते पर चलता है। तारा की मेहनत पर, मजबूती पर। तारा का पति जिम्मेदारी से बचता है। नाम की कमाई करता है। अपनी जरूरत पूरी करने को। घर के हर सदस्य की देखभाल तारा करती है। सबको खिलाकर बचा खाना खाती है। अक्सर बिना खाये या आधे पेट सो जाती है। मशीन को भी आराम की जरूरत होती है। देखभाल की जरूरत। तारा ने अपने शरीर की देखभाल को गैरजरूरी माना। स्वास्थ्य गिरता गया। चिन्ता बनी रही। सेहत और गिरी। आजकल तारा थोड़े काम से थक जाती है।

पाठ तेरह

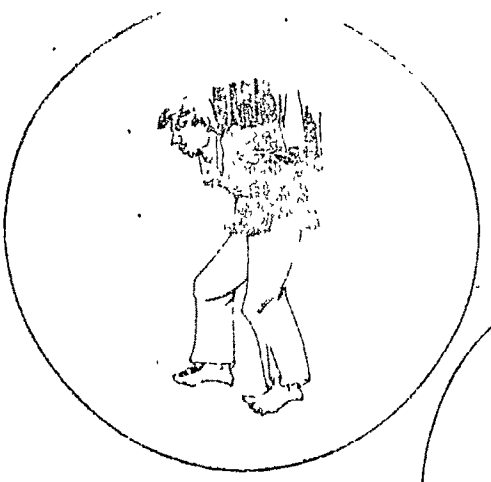

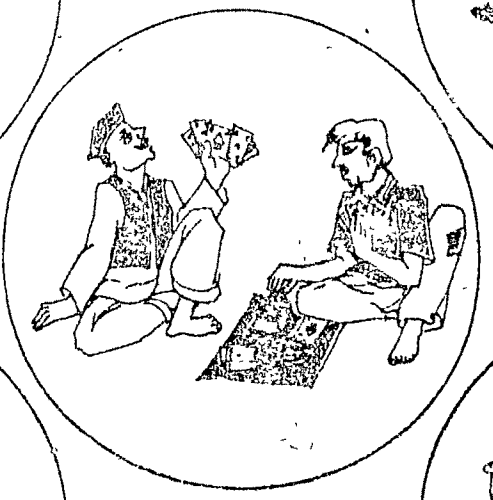

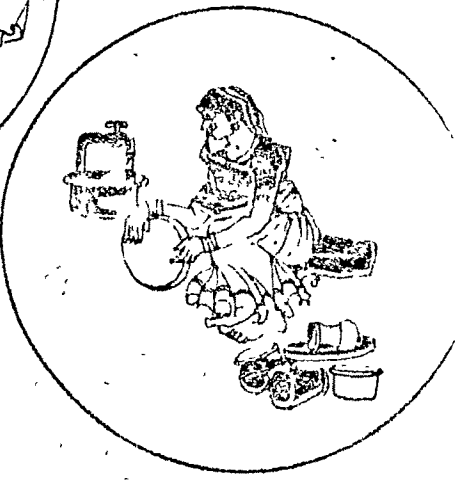

पाठ चौदह

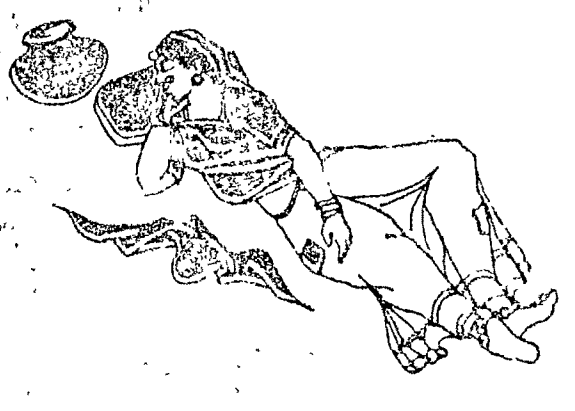

तारा अधिकारों से बेखबर

अधिकारों

ध

धन धान धन्धा धरती धरम धीरज	कच्चा बच्चा सच्चा खच्चर
गंगा मां मांग आंचल गांव गेहूं	तख्ती तनख्वाह ख्वाब ख्याल
अंग अंगारा अंक अंगूर	सभ्य अभ्यास सभ्यता
मध्य ध्यान अध्यापक	उमंग उदासी उमर उफान
गप्प चप्पल गोल गप्पा थप्पड़	जुल्म पुकार

आखिर तारा अपने अधिकारों से कब तक बेखबर रहेगी? कब तक गरीबी, अन्याय और अपमान सहेगी? कब तक सिर नीचा रखेगी? तारा मन से मजबूत है, पर तन कमजोर होता जा रहा है। तारा मन से उदार है पर धन की तंगी, तारा को उदास बना देती है। तारा की उदासी उसे समाज से काटती है। लेकिन महिलाएं तारा की तंगी का कारण समझती हैं। उसका साथ देना चाहती हैं। उसे केवल उसके भरोसे नहीं छोड़ना चाहतीं। उसके पास आती हैं। उससे सवाल करती हैं कि कब तक तारा अपनी गरीबी को अपने आंचल में बांधे रहेगी? अमानत की तरह।

तारा भी इन सवालों का जवाब खोजती है। तारा को लगता है वह अपने ख्वाबों को खोज रही है। खोये सपनों को खोज रही है। तारा का ध्यान बीते दिनों पर जाता है। तुरन्त तारा की आंखों के आगे एक फिल्म घूम जाती है। अपनी यादों में तारा सब देखती है—अपना धरम अपने बच्चे, अपने ख्वाब और वे सब लोग जो तारा को धोखा देते रहे, अंधेरे में रखे रहे। लेकिन तारा को अब इसी तरह जीने का अभ्यास हो गया है। वह फिर भगवान को याद करने लगी है।

अं ध र
फ ख भ उ
? [सवालिया निशान

टोना टोटका और झाड़फूंक [illegible] असर ?

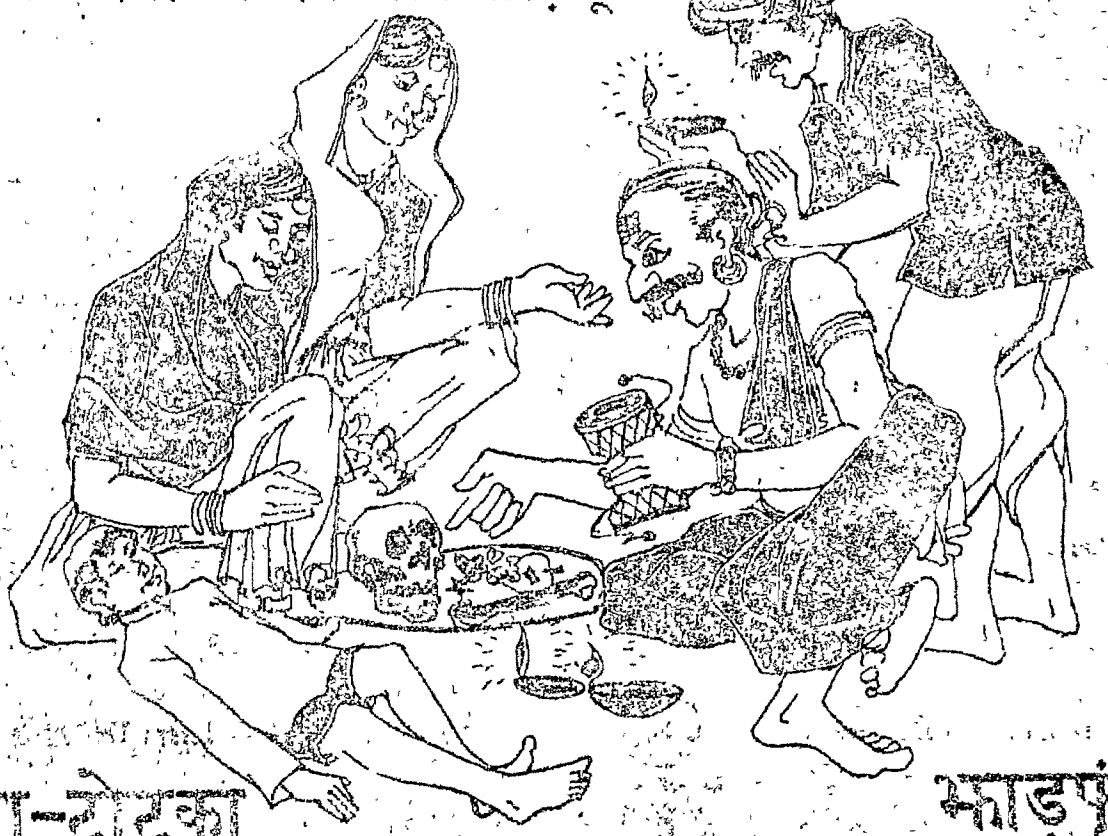

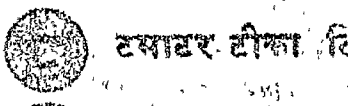

टोना-टोटका

ट

झाड़फूंक

झ

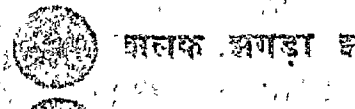

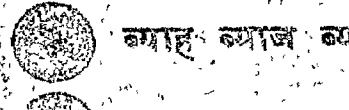

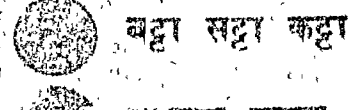

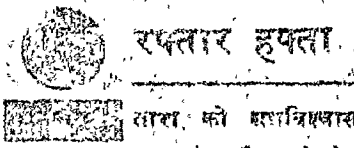

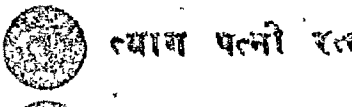

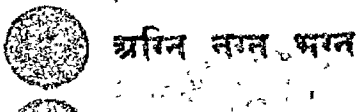

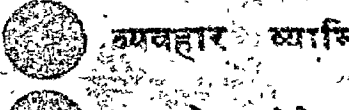

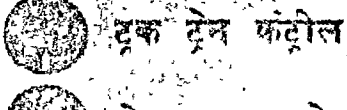

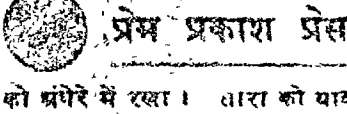

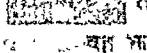

- टमाटर टीका टिटनस पिटाई हाट घाट
- झलक झगड़ा झोली झील झाड़ू झेलना झूला
- ब्याह ब्याज ब्यावर कब्जा सब्जी
- बट्टा सट्टा कट्टा मट्टा भट्टी टट्टी
- रफ्तार हफ्ता दफ्तर
- त्याग पत्नी रत्न
- अग्नि नग्न भग्न
- व्यवहार व्यभिचार
- ट्रक ट्रेन कंट्रोल
- प्रेम प्रकाश प्रेस प्रेत प्रसाद

तारा को अंधविश्वास याद आते हैं। वे अंधविश्वास जिन्होंने तारा को अंधेरे में रखा। तारा को याद आता है — वह झाड़-फूंक और टोने-टोटकों में विश्वास करती थी। इसी विश्वास से उसने ठोकर खायी थी। अपना पहला बच्चा खोया था। चेचक के चक्कर में फंसी। बच्चे को टीके नहीं लगवाये। चेचक निकली तो देवी को मनाती रही। ओझा को बुलाती रही। ओझा झाड़ा देते। झाड़ा देते-देते एक दिन बच्चा चल बसा। वह सिर पीट कर रह गयी। आज वह झाड़े से डरती है।

तारा को गांव का बनिया याद आता है। उसका ब्याज उसके पति का हाल बेहाल कर बैठा है। कभी चुकता नहीं। कभी पूरा नहीं होता। तारा को कारखाने की हड़ताल याद आती है। हड़ताल कई दिन चली। मजदूरी मिली नहीं। गरीबी में आटा गीला होता है। हड़ताल झगड़े-टंटे में बदल गयी। कुछ हट्टे-कट्टे लोगों ने तारा के पति की पिटाई की। तारा को किसी ने बताया कि पिटाई करने वाले सेठ के आदमी थे। तारा सेठों की इस करतूत को उमर भर कोस रही है। उसका पति आज भी जलन की आग में झुलस रहा है। तारा अशान्ति में डूबी है। उसे नफरत होने लगी है।

ब ट् फ् ह र ब

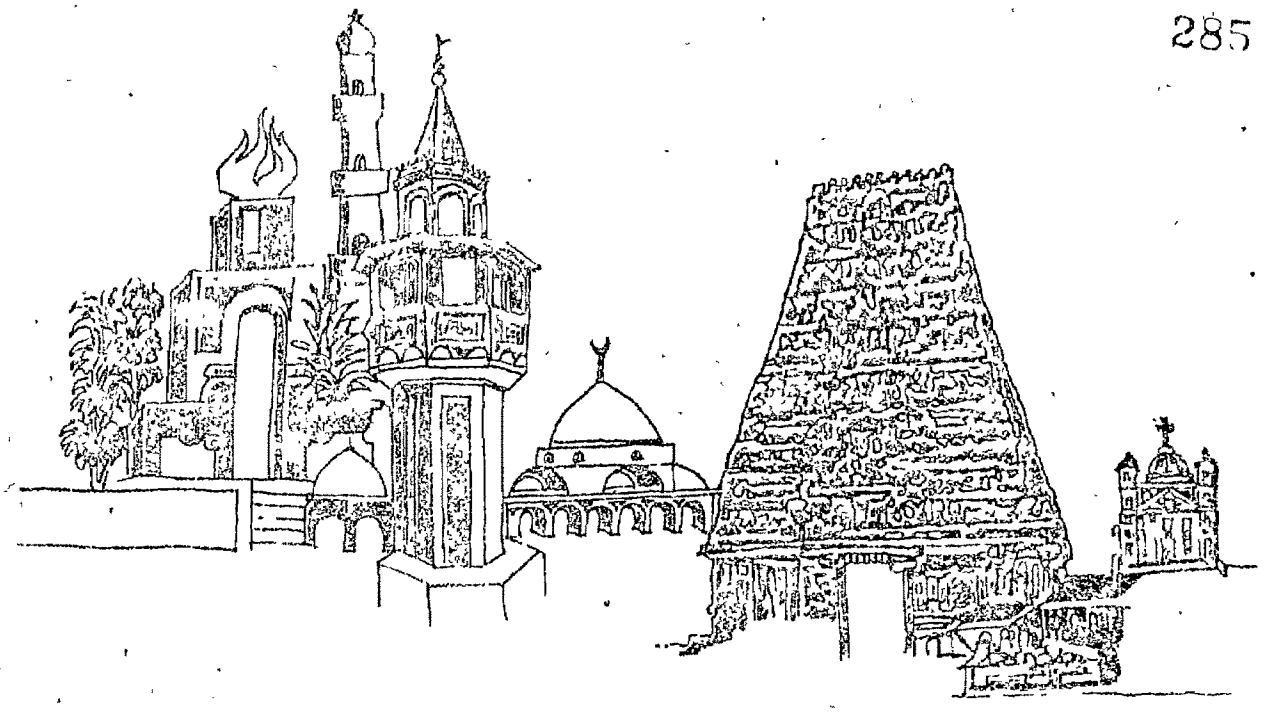

कोई धर्म छुआछूत पाखंड और ढोंग नहीं सिखाता

छुआछूत पाखंड ढोंग

छ ड ढ

छतरी छप्पर छत छूत छज्जा
छलिया छल-कपट छाजला
छानना छाती

डमरू डलिया डरपोक डाली डालडा
डंडा डरना

ढक्कन ढोलक ढप ढपली ढकना

पढ़ना ढाढ़स

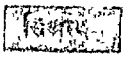

ढ

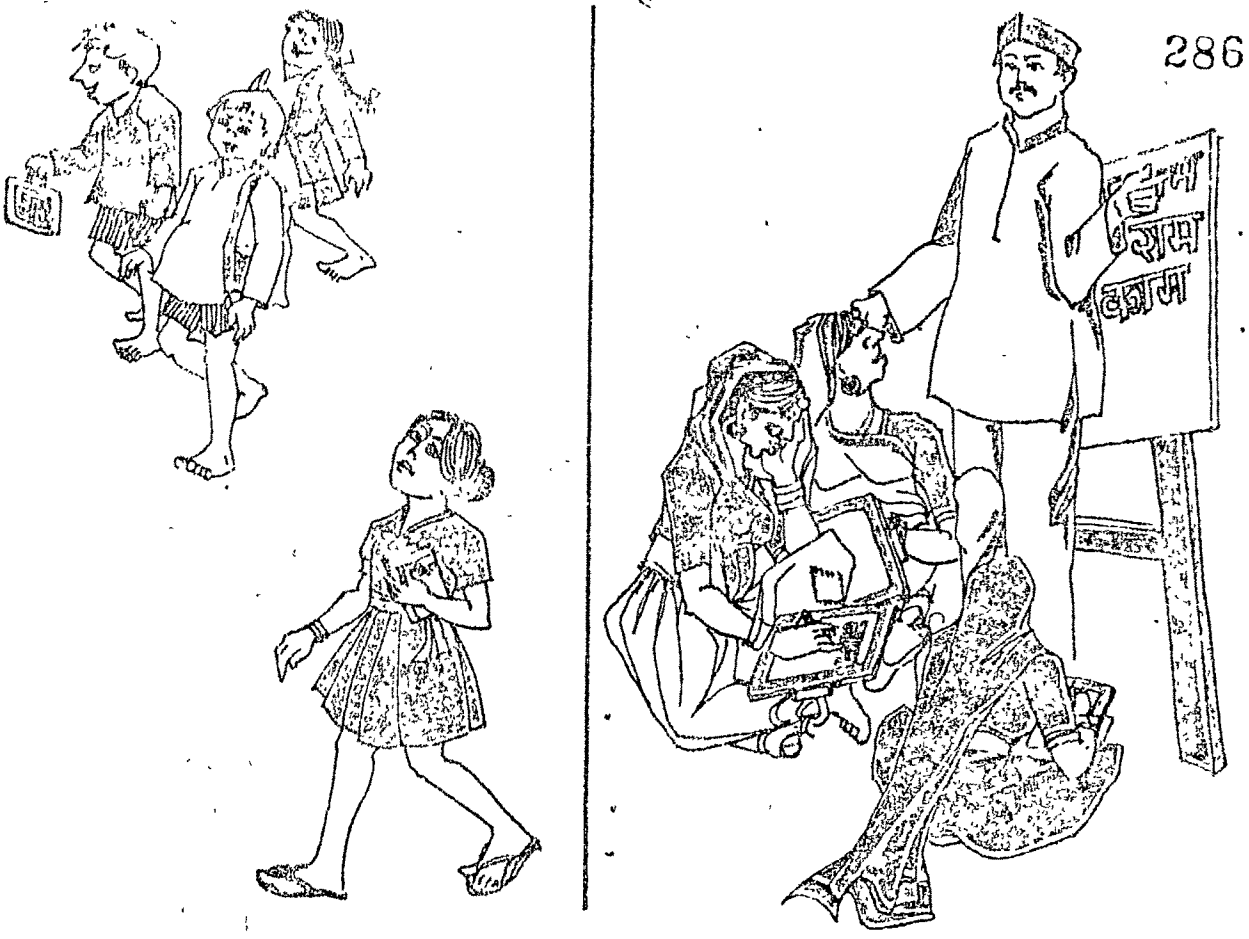

शिक्षा और ज्ञान की हर घर को जरूरत है

शिक्षा

क्ष

ज्ञान

ज्ञ

क्ष क्षमा रक्षा भिक्षा शिक्षा दीक्षा

ज्ञ ज्ञान ज्ञानी अज्ञान ज्ञानशाला

गिनती

हिन्दी	अंग्रेजी
१ ११ २१ ३१ ४१ ५१ ६१ ७१ ८१ ९१	1 11 21 31 41 51 61 71 81 91
२ १२ २२ ३२ ४२ ५२ ६२ ७२ ८२ ९२	2 12 22 32 42 52 62 72 82 92
३ १३ २३ ३३ ४३ ५३ ६३ ७३ ८३ ९३	3 13 23 33 43 53 63 73 83 93
४ १४ २४ ३४ ४४ ५४ ६४ ७४ ८४ ९४	4 14 24 34 44 54 64 74 84 94
५ १५ २५ ३५ ४५ ५५ ६५ ७५ ८५ ९५	5 15 25 35 45 55 65 75 85 95
६ १६ २६ ३६ ४६ ५६ ६६ ७६ ८६ ९६	6 16 26 36 46 56 66 76 86 96
७ १७ २७ ३७ ४७ ५७ ६७ ७७ ८७ ९७	7 17 27 37 47 57 67 77 87 97
८ १८ २८ ३८ ४८ ५८ ६८ ७८ ८८ ९८	8 18 28 38 48 58 68 78 88 98
९ १९ २९ ३९ ४९ ५९ ६९ ७९ ८९ ९९	9 19 29 39 49 59 69 79 89 99
१० २० ३० ४० ५० ६० ७० ८० ९० १००	10 20 30 40 50 60 70 80 90 100

कलाकार बस्ती व स्वामी बस्ती में चलते महिला शिक्षा केंद्र